



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (II)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 326] नई दिल्ली, बुधवार, जुलाई 22, 1977/आषाढ़ 31, 1899

No. 326] NEW DELHI, FRIDAY, JULY 22, 1977/ASADHA 31, 1899

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed
as a separate compilation

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)

NOTIFICATION

New Delhi, the 22nd July 1977

S.O. 580(E).—In exercise of the powers conferred by section 7 of the Finance Commission (Miscellaneous Provisions) Act, 1951 (33 of 1951), the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Finance Commission (Salaries and Allowances) Rules, 1951, namely :—

1. These rules may be called the Finance Commission (Salaries and Allowances) Amendment Rules, 1977

2. In rule 2 of the Finance Commission (Salaries and Allowances) Rules, 1951 (hereinafter referred to as the said rules), in sub-rule (1), for the words "Provided that where any person so appointed", the following shall be substituted, namely :—

"Provided that where any person who had been a Judge of the Supreme Court is appointed as the Chairman of the Commission, he shall be entitled—

(1) to a monthly salary at the same rate as was admissible to him as a Judge of the Supreme Court immediately before relinquishing office as such Judge, reduced by pension and pension equivalent of other forms of retirement benefits drawn by him;

- (11) (a) in respect of journeys undertaken for assuming charge as Chairman of the Commission, to the actual railway fare not exceeding the fare for the highest class including the air-conditioned class, for self and members of the family from the ordinary place of his residence to New Delhi, plus, the actual cost on transport, by passenger train, at owner's risk, of one motor car plus actual cost on transport of other personal effects not exceeding the expenditure which would be incurred on the transport of a full wagon of goods and the expenditure incurred on loading and unloading of such personal effects,
- (b) in respect of travelling on duty as Chairman of the Commission, to the allowances as are admissible to a Judge of the Supreme Court in accordance with rule 5, excluding item (1) of the third proviso to clause (f) thereof, of the Supreme Court Judges (Travelling Allowance) Rules, 1959, as in force for the time being; and
- (c) on relinquishing charge as Chairman of the Commission, to the facilities as are admissible to a Judge of the Supreme Court on retirement from service, in accordance with sub-rule (3) of rule 6 of the Supreme Court Judges (Travelling Allowance) Rules, 1959, as in force for the time being, and
- (11) to the use of a fully furnished residence in New Delhi throughout his term of office and for a further period of 15 days immediately thereafter, without payment of any rent for such use.

Provided further that where any person, other than a person who had been a Judge of the Supreme Court, so appointed”.

3. In rule 3 of the said rules, for sub-rule (3), the following sub-rule shall be substituted, namely:—

“(3) A person, being a retired Government servant or a retired servant of the Reserve Bank (other than a retired High Court Judge) appointed to render whole-time service as a Member of the Commission shall be entitled—

- (a) to a monthly salary at the same rate as was admissible to him immediately before retirement from service of the Government or, as the case may be, from service of the Reserve Bank, reduced by pension and pension equivalent of other forms of retirement benefits drawn by him;
- (b) to draw travelling allowance, including daily allowance, for any journey performed by him as a Member of the Commission at such rates as are admissible to a Government servant of the First Grade;
- (c) to draw compensatory allowance at the rate of Rs. 75 per mensem, and
- (d) when not in occupation of a residence provided by the Central Government, to house rent allowance at the same rate and subject to such terms and conditions as are applicable, from time to time, to a serving Government servant of equivalent status”.

[No. 13(1)-B(S)/77]

K. N. ROW, Jt. Secy.

वित्त मंत्रालय

(आर्थिक कार्य विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 22 जुलाई, 1977

का० आ० 580(अ).—केन्द्रीय सरकार, वित्त आयोग (प्रकीर्ण उपबन्ध) अधिनियम, 1951 (1951 का 33) की धारा 7 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, वित्त आयोग (वेतन और भत्ता) नियम, 1951 में और सशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात्—

1 इन नियमों का नाम वित्त आयोग (वेतन और भत्ता) सशोधन नियम, 1977 है।

2 वित्त आयोग (वेतन और भत्ता) नियम, 1951 (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त नियम कहा गया है) के नियम 2 में, उप-नियम (1) में “परन्तु यह कि वहाँ जहाँ इस प्रकार नियुक्त किया गया व्यक्ति” शब्दों के स्थान पर, निम्नलिखित रखा जाएगा, अर्थात् :—

“परन्तु यह कि जहाँ कोई ऐसा व्यक्ति जो उच्चतम न्यायालय का न्यायाधीश रह चुका है, आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया जाता है, वहाँ वह निम्नलिखित का हकदार होगा—

- (i) उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में अपना पदभार छोड़ने के ठीक पूर्व ऐसे न्यायाधीश के रूप में उसे अनुज्ञेय दर पर मासिक वेतन, उससे उसके द्वारा ली गई पेंशन और अन्य प्रकार के सेवा निवृत्ति फायदों के समतुल्य पेंशन कम करने के पश्चात् ,
- (ii) (क) आयोग के अध्यक्ष के रूप में पदभार, ग्रहण करने के लिए की गई यात्राओं की बाबत, अपने सामान्य निवास स्थान से नई दिल्ली तक अपने लिए तथा अपने कुटुम्ब के सदस्यों के लिए वास्तविक रेल भाड़ा जो, वातानुकूलित श्रेणी सहित, उच्चतम श्रेणी के भाड़े से अधिक नहीं होगा और इसके अतिरिक्त यात्री गाड़ी में, स्वामी के जोखिम पर, एक मोटर कार के परिवहन का वास्तविक खर्च और अन्य व्यक्तिगत माल-असबाब के परिवहन का वास्तविक खर्च, जो मालगाड़ी के पूरे डिब्बों के परिवहन पर उपगत खर्च से अधिक नहीं होगा तथा ऐसे व्यक्तिगत माल-असबाब को लाने और उतारने पर उपगत खर्च ,
- (ख) आयोग के अध्यक्ष की हैमियत से कर्तव्य पर यात्रा की बाबत, तत्समय यथाप्रवृत्त उच्चतम न्यायालय न्यायाधीश (यात्रा भत्ता) नियम, 1959 के नियम 5 के अनुसार, खण्ड (च) के तहत परन्तु की मद सं० (i) को छोड़ कर, उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश को अनुज्ञेय के अनुसार भत्ते; और
- (ग) आयोग के अध्यक्ष का पद त्यागने पर, तत्समय यथाप्रवृत्त उच्चतम न्यायालय न्यायाधीश (यात्रा भत्ता) नियम, 1959 के नियम 6 के उपनियम (3) के अनुसार उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश को सेवा से निवृत्त होने पर, अनुज्ञेय के अनुसार सुविधाएं ; तथा
- (iii) उसके पूरे कार्यकाल के दौरान और उसके तुरन्त पश्चात् 15 दिन की और अवधि तक नई दिल्ली में पूर्णतः सुसज्जित वगैर भाड़े के वास-सुविधा .

परन्तु जहाँ कोई ऐसा व्यक्ति नियुक्त किया जाता है जो उस व्यक्ति से भिन्न है जो उच्चतम न्यायालय का न्यायाधीश रह चुका है ”।

3. उक्त नियमों के नियम 3 में, उप-नियम (3) के स्थान पर, निम्नलिखित उप-नियम रखा जाएगा, अर्थात् —

“(3) वह व्यक्ति जो आयोग की पूर्णकालिक सदस्य के रूप में सेवा करने के लिए नियुक्त किया जाता है, और जो सेवा निवृत्त सरकारी सेवक या रिजर्व बैंक

सेवा निवृत्त सेवक (उच्च न्यायालय के सेवा निवृत्त न्यायाधीश से भिन्न) है तो वह निम्नलिखित का हकदार होगा -

- (क) यथास्थिति, सरकार की सेवा से या रिजर्व बैंक की सेवा से निवृत्त होने के ठीक पूर्व उसे अनुज्ञेय दर पर मासिक वेतन, उसमें से उसके द्वारा ली गई पेंशन और अन्य प्रकार के सेवा निवृत्ति फायदों के समतुल्य पेंशन कम करने के पश्चात् ,
- (ख) आयोग के सदस्य के रूप में उसके द्वारा की गई किसी यात्रा के लिए उन दरों से यात्रा भत्ता, जिसमें दैनिक भत्ता भी जाता है, जो प्रथम श्रेणी से सरकारी सेवक की अनुज्ञेय है ,
- (ग) 75 रुपए प्रति मास की दर से प्रतिकरात्मक भत्ता ; और
- (घ) यदि वह केन्द्रीय सरकार द्वारा दिए गए आवास में नहीं रह रहा है तो उसी दर से और उन्हीं निबन्धनों और शर्तों के अधीन गृहभाटक भत्ता जो समतुल्य परिस्थिति के मेवारत सरकारी सेवकों को समय समय पर अनुज्ञेय है ” ।

[सं० 13(1)-बी(एस)/77]

के० एन० राव, संयुक्त सचिव ।

ERRATA

In the Ministry of Finance (Department of Economic Affairs) Notification No S.O. 761(E) dated 1st December, 1976 published in Part II, Section 3, Sub-section (ii) of the Gazette of India Extraordinary, appearing on pages 2147 to 2154, on page 2148, in Para 3 in line 8 the words and figure “1st January, 1976” may be read as “1st January, 1978”.

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मन्त्रालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा
मुद्रित तथा नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, दिल्ली द्वारा प्रकाशित 1977